धर्म और संगीत का अंतःसम्बन्ध

डॉ० शम्पा चौधरी
एसोसिएट प्रोफेसर
संगीत विभाग
वी०एम०एल०जी० कॉलेज, गाजियाबाद
ईमेलः shampa1410@gmail.com

Reference to this paper should be made as follows:

डॉ० शम्पा चौधरी

धर्म और संगीत का अंतःसम्बन्ध

Artistic Narration 2022,
Vol. XIII, No. 2,
Article No.14 pp. 92-97

https://anubooks.com/journal-volume/artistic-narration-2022-vol-xiii-no2

सारांश

संगीत ललित कलाओं में सर्वोपरि है। यह एक ऐसी अमूर्त सौंदर्य की प्रतिष्ठा कराती हैं, जिसका प्रभाव विश्वव्यापी है। नाद ब्रह्मस्वरूप है। सृष्टि का आरंभ अनाहत नाद से माना जाता है, जो कि ब्रह्मांड व्यापी है। संगीत एक ऐसी दिव्य एवं अलौकिक शक्ति हैं, जिसके द्वारा ईश्वर को प्राप्त किया जा सकता है। संगीत आनंद की अनुभूति हैं एवं धर्म सत्य की उपलब्धि है। संगीत के अलावा ऐसी कोई भी कला नहीं जो हमें ईश्वर से निकटतम ले जाए। धर्म चाहे कोई भी हो, ईश उपासना प्रत्येक धर्म का लक्ष्य है। प्रत्येक धर्म में मंत्रों, वाणियों, हदीसों, प्रवचनों, स्तुतियों में संगीत को स्थान मिला है। सभी धर्मों तथा संत महापुरुषों ने संगीत को परम पवित्र, कल्याणकारी तथा ईश्वर प्राप्ति का मुख्य साधन माना है। वैदिक काल में जहां संगीत को मोक्ष प्राप्ति का साधन माना जाता था, वहीं दूसरी ओर जनरंजन करना भी इसका उद्देश्य था। संगीत अपनी आध्यात्मिकता सहित आज भी मानव को शांति प्रदान करता है।

मुख्य बिन्दु

संस्कृति, कला, संगीत, धर्म, दर्शन, आध्यात्म।

संगीत की दृष्टि में धर्म व्यापक भी है और असीमित भी। इस अदृश्य शक्ति की खोज का एकमात्र साधन ही संगीत है। धर्म ईश्वर से जुड़ा है और संगीत प्रतयेक सामाजिक प्राणी के कण–कण में ईश्वर की तरह बैठा हुआ है। धर्म सत्य की खोज है तो संगीत आनंद की अनुभूति। आनंद ईश्वर का स्वरूप है। संगीत के ईश्वर रूप होने के कारण जो लोग संगीत का अभ्यास करते हैं वे तप, दान, यज्ञ, कर्म, योग आदि के कष्ट न झेलते हुए मोक्ष मार्ग तक पहुंचते हैं। भारतीय मनीषियों ने सदैव ही मुक्तकण्ठ से इस कला का यशोगान किया है क्योंकि ये चार पुरुषार्थ धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की प्राप्ति संगीत द्वारा हसज ही हो सकती है।

"वीणावादनतत्वज्ञः श्रुजितिविशारदः
तालज्ञश्चाप्रयासेन मोक्षमार्ग प्रयच्छति" [1]

भक्ति मार्ग में, संगीत के साथ भगवद्भजन करने से मन शीघ्र ही ईश्वर के नामरूप में लीन हो जाता है। संगीत समस्त जीव समूह को आनंद का वरदान देकर अपनी ओर खींच लेता है।

"पशुर्वेति शिशुर्वेति वेत्ति गानरंस फणी" [2]

इसी प्रकार एक अन्य उदाहरण में पं० शारंगदेव जी ने संगीत के माहामात्य का वर्णन करते हुये इसे धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष आदि प्राप्ति का साधन माना है।

"तस्य गीतस्य माहांत्म्यं के प्रशंसितुमीश्ते
धर्माथाकाममोक्षणामिदमेवैकसाधनम्" [3]

अतः हम कह सकते हैं कि संगीत ही ऐसा एक मात्र साधन हैं जिसमें धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष चारों पुरुषार्थ मिलते हैं। भगवद्भजन से धर्म, राजाओं और प्रभुओं से मिले हुये सम्मान के रूप में अर्थ, अर्थ से काम और ईश्वर प्रसाद के फलस्वरूप मोक्ष की प्राप्ति होती है।

ईश्वर की उपासना करना प्रत्येक धर्म की वृत्ति है और प्रत्येक धर्म ने संगीत को ईश्वराउपासना का सशक्त माध्यम माना है। हमारे देश में विभिन्न भाषाओं के एवं धर्मो के लोग रहते हैं जैसे हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई, पारसी आदि–आदि। इन सब धर्मों में संगीत की प्रधानता एवं महत्त्वता को स्पष्ट देखा जा सकता है। हिन्दू धर्म का सामवेद पूर्णतयः गेय है। इसके मंत्रों का उच्चारण पूर्णतयः संगीतबद्ध है। प्रत्येक धर्म में संगीत इस तरह से समाया हुआ हैं कि धर्म को हम संगीत से कदापि अलग नहीं कर सकते। जैसे मुस्लिम धर्म में नमाज पढ़ने से पूर्व मौला द्वारा दी जाने वाली अजान "अल्ला हो अकबर" एक भक्ति भावना पूर्ण गंभीर आवाज़ है। जो पूर्ण रूप से गेय है। इसके अतिरिक्त सूफी संतों ने भी अपनी उपासना में संगीत को महत्त्वपूर्ण स्थान दिया है। सिक्ख धर्म के गुरुद्वारों में जो प्रार्थनाएं की जाती हैं वे भी सांगीतिक हैं। इसी प्रकार ईसाई धर्म में भी गिरजाघरों

में की जाने वाली करुणामयी प्रार्थनाएं ईसाई धर्म में संगीत की महत्त्वता को स्पष्ट बताती हैं। अतः ईश्वरोपासना के लिये सबसे ज्यादा सबल और पवित्र साधन संगीत है। प्रत्येक धर्म की धरोहर संगीत है, इसलिये संगीत को हम धर्म से अलग नहीं कर सकते।

भारतीय संगीत को धर्म के साथ संबंध आदिकाल से ही स्थापित हैं। संगीत के आदि विद्वानों ने, शास्त्रवेत्ताओं ने संगीत को नाद वेद की संज्ञा देकर उसकी उत्पत्ति सृष्टि कर्ता ब्रह्मा जी द्वारा बताई है। भारतीय संगीत के तीन अंग गायन, वादन व नृत्य इन तीनों का उद्‌गम स्थान भी धर्म को ही बताया है। शिव प्रदोश स्त्रोत में लिखा है कि तीन जगत की जननी गौरी को स्वर्ग सिंहासन पर सुशोभित कराकर प्रदोश के समय शिव ने नृत्य करने की इच्छा प्रकट की। इस अवसर पर सब देवता उन्हें घेरकर खड़े हो गये और उनकी स्तुति करने लगे। सरस्वती ने वीणा, इन्द्र ने वेणु, ब्रह्मा ने करताल बजाना प्रारंभ किया। लक्ष्मी जी ने गाना गाया और विष्णु भगवान मृदंग बजाने लगे। इस नृत्यमय संगीतोत्सव को देखने के लिये गन्धर्व, यज्ञ, पतंग, उरग, सिद्ध, साध्य, विधाद्यर, देवता व अप्सरायें आदि सभी उपस्थित थे।[4]

एक अन्य किवदन्ति के अनुसार पार्वती जी की शयन मुद्रा को देखकर शिवाजी ने उनके अंग प्रत्यंगों के आधार पर “रुद्रवीणा” की रचना की और अपने पांच मुखों से पंच रागों की उत्पत्ति की। तत्पश्चात् छठज्ञ राग पार्वती जी के श्री मुख से उत्पन्न हुआ। शिव ने भैरव, हिण्डोल, मेघ, दीपक और श्री राम बनाये और छठे राग कौशिक की उत्पत्ति पार्वती जी ने की।[5]

विभिन्न धर्मों के आचार्यो ने अपने–अपने दृष्टिकोण के अनुसार संगीत की उत्पत्ति सम्बन्धी सिद्धान्त प्रस्तुत किये हैं। भारतीय ऋषियों ने सृष्टि की उत्पत्ति नाद से मानी है और ब्रह्माण्ड के प्रत्येक चराचर वस्तु में नाद की विशेष भूमिका बतलाई है। भारतीय ऋषियों की ये मान्यता है कि–

“नाद रूपम् स्मृतो ब्रह्मा
नाद रूपो जर्नादन
नाद रूपो खरा शक्ति
नाद रूपों महेश्वरा।”[6]

अर्थात् नाद ही ब्रह्मा, विश्णु और महेश का स्वरूप है।

नाद साध्य भी है और साधन भी। इसीलिये तो भारतीय ऋषि मुनियों ने ईश्वरा प्राप्ति के लिए, उसकी उपासना व आराधना के लिये एक मात्र सहारा संगीत का लिया।[7]

मन की एकाग्रता संगीत द्वारा ही सम्भव है। मन एकाग्र होना तभी हम सच्चिदानन्द को प्राप्त कर सकेंगे। गोस्वामी तुलसीदास द्वारा उद्धरित पंक्तियां इस प्रकार से है –

“हरिपद प्राति न होय बिन गाय सुने।”[8]

इसी प्रकार कवि रवीन्द्र नाथ ठाकुर ने भी संगीत की पवित्रता को बड़े ही सुन्दर ढंग से व्यक्त किया है – मैं यह जानता हूं कि इसी गान के बल से मैं ईश्वर के सम्मुख बेने के योगय होता हूं। प्राण और मन देकर भी मैं जिसके समीप नहीं आ सकता था, गान देकर उसी के चरण छू लेता है।[9] कहने का तात्पर्य यह है कि ईश्वरोपासना के लिये सबसे ज्यादा सबल और पवित्र साधन संगीत ही है। एक अन्य पंक्तियों में भगवान श्रीकृष्ण पद्म पुराण में नारद से कहते हैं –

"नाह वसामि बैकुण्ठे, हृदये न च
मद्भक्ता यत्रागायन्ति तत्रतिष्ठामि नारद।" [10]

अर्थात् हे नारद। न तो मैं बैकुण्ठ में रहता हूं, न योगियों के हृदय में। जहां मेरे भक्त संगीत चर्चा, गायन–वादन चर्चा करते है, मैं वहीं रहता हूं।" हमारे देश में वैदिक युग से ही धार्मिक अनुष्ठानों या यज्ञादि के समय जो भी मंत्रोच्चारण किये जाते थे, वे सब स्वर, जय व ताल बद्ध होते थे। ॠग, यर्जुः तथा अथर्ववेद में तो गीत, वाद्य और नृत्य का प्रयोग मिलता ही है।

"त्रिवृद्धे शिल्पं नत्यं गीतं वादितामिति" [11]

साथ ही सामवेद तो पूर्णतया संगीतिक है। साम शब्द का अर्थ वह गीतिक्रिया है, जो आभ्यन्तर प्रयत्न से उद्भूत स्वरविशेषों की अभिव्यंजिका है। साम शब्द से अभिहित "धुनें" ऋचाओं के आधार से गाई जाने पर "साम" कहलाती हैं – "प्रगीतं मन्त्रवाक्यं सामशब्देनोच्यते"[12] साम का गान ऋग्वेद की ऋचाओं पर आश्रित हैं, क्योंकि गान के लिये साहित्य की आवश्यकता सदैव रही है। उस समय के संगीतज्ञों ने ऋग्वेद में द्वन्द्वमय काव्य को गान के लिये उपयुक्त समझा होगा। ललित एवं छन्दोमय काव्य, जो कि देवताराधन के लिये रचे गये। इस काव्य में संगीत का मजुल समन्वय कर सामगान के रूप में ईश्वराराधना का प्रभावशाली माध्यम माना जाने लगा। इस प्रकार इन्हीं गेय ऋचाओं के परवर्ती संग्रह को "सामवेद" का नाम दिया गया।

"सामशब्दवाच्यस्य गानस्य स्वरूपं ॠगक्षरेषु
कुष्टादिभिः सप्तभिः स्वरैरक्षरविकारदिमिश्च निष्पाद्यते" [13]

तात्पर्य यह कि साम, जो कि मौलिक रूप से गान का द्योतक हैं, साहित्य के माध्यम से अभीष्ट विस्तार को प्राप्त होता है। इसी प्रकार रामायण में लव और कुश द्वारा रामायण गाथा ताल और लय से युक्त स्वरों और शब्दों में पिरोये हुये तथा तन्त्री के स्वर, लय और भाषा के व्यंजन से गुम्फित था।[14]

एक अन्य उदाहरण जिसमें शब्द, स्वर, ताल एवं छन्द का अनूठा सामंजस्य है। यह शिवताण्डवस्त्रोतम् है। जिसकी रचना रावण द्वारा शिव की आराधना करते समय हुई –

"जटाटविगल्लजलः प्रवाहि पावितस्थले
गलेअवलम्मयताम्भिताम् भुजंगतुंग मालिकाम्
ङ मङ ङ मड ङ मङ ङ मडनिनानवडवरवयम्
चकार चण्हुताण्डवम् तनोतुना शिवाशिवम्" [15]

यह शिवताण्डवस्त्रोत इस प्रकार से शब्द स्वर, ताल एवं छंद में एकरूप है कि इसमें संगीत का मीठा आभास होता है।

हिन्द धर्म में जितने भी संस्कार माने जाते हैं वे सभी धर्म ओर संगीत से ओत–प्रोत है। जैसे जन्म, नामकरण, जडु–ला, यज्ञोपवीत, सगाई, विवाह एवं मृत्यु इत्यादि ये सभी संस्कार सांगीतिक हैं। हमारे जितने भी उत्सव, पर्व, व्रत, त्यौहार हों सबमें संगीत की प्रधानता देखने को मिलती हैं। जैसे गणगौर, होली, तीज आदि। इस प्रकार मनुष्य ने जन्म लेते ही संगीत की सुमधुर ध्वनि को सुना और मृत्यु होने पर भी "राम नाम सत्य है" कि एक मुख ध्वनि के साथ उसका पंचतत्त्वों से बना हुआ शरीर पुनः पंचतत्त्वों में लीन हो गया।

यह कहना अनुचित न होगा कि संगीत और धर्म का सम्बन्ध चोली और दामन जैसा है। मनुष्य इसको स्वर लहरियों में खोकर भगवान में पूर्णतः लीन हो जाता है। चाहे मनुष्य कितनी भी परेशानियों में क्यों न घिरा हुआ हो, वह सांगीतिक ध्वनि के शीतल, पावन स्पर्श को पाकर उसके ह्रदय से कुलषित वेदनाएं क्षण भर में विरोहित हो जाती हैं।

वर्तमान युग में वैदिक संगीत की अपेक्षा भक्ति संगीत अधिक प्रचलित हैं। इसका कारण यह है कि भक्ति संगीत का काव्य भण्डार, सरस एवं सरल है। जिसके द्वारा साधारण से साधारण जनता भी आनन्दानुभूति का आभास कर सकती है। भक्ति काव्य में सत्यम्, शिवम् और सौंदर्य का अद्भुत समन्वय देखने को मिलता है। कई सन्त भक्तों ने जिनमें से कुछ के नाम इस प्रकार हैं – वल्लभ, चैतन्य, सूरदास, मीरा, तुलसीदास, पुगंदरदास, त्यागराज, तुकाराम, हरिदास, जयदेव, नानक, विद्यापति इत्यादि ने स्वर और शब्द की चेतन शक्ति से ही भगवान का अनन्य प्रेम उपलब्ध किया तथा जगत को सत्य का संदेश दिया।

अतः संगीत साधना का परम स्वरूप गायन शैलियों में से भजन और कीर्तन ही है। संगीत की अबोध शक्ति के आगे कौन नतमस्तक नहीं होता। यह भी सत्य है कि जहां भगवान के भक्त गायन करते हैं वहीं उसका मन भी रमता है।

उपर्युक्त तथ्यों से यह निष्कर्ष निकलता है कि संगीत ईश्वर प्राप्ति का एक सशक्त माध्यम है। विद्वानों ने संगीत कला को केवल कला ही नहीं अपितु उपासना की पद्धति भी माना है। जैसे कि हम पीछे बता चुके हैं कि संगीत से बढ़कर प्रभु को रिझाने वाली अन्य कोई भी वस्तु इस संसार में नहीं हैं, ये पूर्णतया सत्य प्रतीत होता है। आज भी

ईश्वरोपासना में संगीत की महत्त्वता ज्यों की त्यों बनी हुई हैं। अतः हम यह कह सकते हैं कि संगीत धर्म का पूरक है।

संदर्भ ग्रन्थ

1. याज्ञवल्क्य, आचार्य. (1986). स्मृति याज्ञवल्क्य. चौखंभा संस्कृत सिरीज ऑफिस. विद्या विलास प्रेसः गोपाल मंदिर, बनारस सिटी. पृष्ठ 10.
2. शास्त्री, के० वासदेव., (1958). संगीत शास्त्र. हिन्दी समिति प्रकाशन शाखा सूचना विभागः लखनऊ (उ०प्र०). पृष्ठ 2.
3. पं० शारंगदेव., (2000). संगीत रत्नाकर लक्ष्मीनारायण गर्ग. संगीत कार्यालयः हाथरस. श्लोक–30. पृष्ठ 210.
4. व्यास, संत वेद., (2000). शिव महापुराण. गीताप्रेसः गोरखपुर. पृष्ठ 420.
5. वही, पृष्ठ 424.
6. स्वामी, शरण. (2021). वैदिक इतिहास. त्रयंबक प्रकाशनः नेहरू नगर, कानपुर (उ० प्र०) पृष्ठ 23.
7. पं० अहोबल. (1972). संगीत पारिजात. संगीत कार्यालयः हाथरस, पृष्ठ 12.
8. तिवारी, रामजी. (2019). गोस्वामी तुलसीदास. साहितय अकादमीः दिल्ली. पृष्ठ 12.
9. ह
10. पं० अहोबल. (1972). संगीत पारिजात. संगीत कार्यालयः हाथरस. पृष्ठ 11.
11. परांजपे, डॉ० शरतचंद्र श्रीधर. (1968). भारतीय संगीत का इतिहास. चौखंबा संस्कृत संस्थानः वाराणसी. पृष्ठ 19.
12. उपाध्याय, आचार्य बलदेव. (1945). संस्कृत वाङ्मय. शारदा मंदिरः वाराणसी. श्लोक–7. पृष्ठ 12.
13. परांजपे, डॉ० शरतचंद्र श्रीधर. (1968). भारतीय संगीत का इतिहास, चौखंभा संस्कृत संस्थानः वाराणसी. पृष्ठ 56.
14. महर्षि वाल्मीकि. (2000). रामायण उत्तरकाण्ड. गीता प्रेस गोरखपुर. श्लोक 4–9. पृष्ठ 94.
15. संत वेदव्यास. (2000). शिवमहापुराण. गीता प्रेस गोरखपुर. पृष्ठ 15.